

Original Article

कृषि तकनीकी परिवर्तन पर्यावरण एवं आर्थिक प्रभाव : बक्सर जिला के संदर्भ एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. राज किशोर कुमार

भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोध गया

Manuscript ID:

सारांश

JRD -2025-171046

ISSN: 2230-9578

Volume 17

Issue 10

Pp. 215-219

October. 2025

Submitted: 20 Sept. 2025

Revised: 30 Sept. 2025

Accepted: 15 Oct. 2025

Published: 31 Oct. 2025

कृषि आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है, क्योंकि यह खेती के माध्यम से उत्पादों जैसे भोजन, खाद्य, फाइबर और कई अन्य वांछित जीविका का एक साधन माना जाता है। कृषि पूरे विश्व में उत्पादों का उत्पादन करने की प्रक्रिया है। यह मानव उपयोग के लिए पौधों और जानवरों के विकास का प्रबंधन करने की एक कला है। आज कृषि ऐसी नव प्रवर्तन शैली और पद्धति है, जिसमें स्वदेशी ज्ञान के साथ—साथ आधुनिक ज्ञान, आधुनिक उपकरण तथा प्रत्येक पहलु को भी देखा जा रहा है। जैसे खेती की तैयारी, खेती का चुनाव, खरपतवार नियंत्रण, पौधा संरक्षण, फसलोत्तर प्रबंधन, फसल की कटाई आदि जैसी महत्वपूर्ण कृषि पद्धतियों के उपयोग को ही हम आधुनिक कृषि कहते हैं, या रूप में जानते हैं। इस तरह की कृषि में संसाधनों का अनुकूलन होता है जिससे किसानों की दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है। आधुनिक समय में नये—नये तकनीकी उपयोग का प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ा रहा है। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में नये—नये तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है जिसके फलस्वरूप पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। क्योंकि तापमान, वर्षा आदि में बदलाव आने से मिट्टी की क्षमता, कीटाणु और फैलने वाली बीमारियाँ अपने सामान्य तरीके से अलग प्रसारित हो रही हैं। जिस कारण हमारे वातावरण में तीव्र गति से बढ़ता प्रदूषण व प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से पर्यावरण में बदलाव देखने को मिल रहा है। जिसका पूरा असर आज हमारे कृषि पर दिखाई पड़ती है। हमारे भारत में जनसंख्या की वृद्धि तीव्र गति से बढ़ रही है, जिसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ा है, क्योंकि जिस प्रकार से तीव्र गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है और पर्याप्त संसाधनों में वृद्धि के विपरीत औसतन कमी भी आ रही है, जिसके फलस्वरूप मानव जीवन पर काफी बुरा असर पड़ रहा है, क्योंकि जिस प्रकार से जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है और दूसरी तरफ कृषि उत्पाद का उत्पादन दर में भी कमी आ रही है। भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। तकनीकी प्रगति ने कृषि उत्पादन को बढ़ाने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बिहार राज्य के बक्सर जिला, गंगा नदी के मैदानी भाग में उपजाऊ भूमि और सिंचाई संसाधनों से परिपूर्ण है। यहां की कृषि परंपरागत पद्धति से आधुनिक तकनीकी पद्धति की ओर तेजी से अग्रसर हुई है। इस परिवर्तन का प्रभाव न केवल कृषि उत्पादन और किसानों की आय पर पड़ा है, बल्कि पर्यावरणीय असंतुलन और सामाजिक-आर्थिक ढांचे पर भी देखा जा सकता है।

मूल शब्द: नवाचार, मशीनिकरण, कृषि पर्यावरण, कृषि पद्धति, मृदा, आर्थिक प्रभाव,

बक्सर जिले का कृषि परिदृश्य

- भौगोलिक स्थिति: बक्सर जिला उत्तर बिहार का एक महत्वपूर्ण जिला है, जो गंगा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है।
- मिट्टी : यहां की मिट्टी मुख्यतः जलोढ और दोमट है, जो अत्यंत उपजाऊ मानी जाती है।
- मुख्य फसलें: धान, गेहूं, मक्का, गन्ना, दालें, तिलहन एवं सब्जियां।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

डॉ. राज किशोर कुमार, भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोध गया

How to cite this article:

कुमार, . राज . किशोर . (2025). कृषि तकनीकी परिवर्तन पर्यावरण एवं आर्थिक प्रभाव : बक्सर जिला के संदर्भ एक भौगोलिक अध्ययन. *Journal of Research and Development*, 17(10), 215–219.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.17656897>



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdvrb.org/>

DOI:

10.5281/zenodo.17656897



- सिंचाई के साधन: नलकूप, ट्यूबवेल, इलेक्ट्रिक पंप और गंगा से नहर।
- जलवायु: उपोष्णकटिबंधीय जलवायु, जो खरीफ और रबी दोनों फसलों के लिए उपयुक्त है।

कृषि तकनीकी परिवर्तन की विशेषताएँ

- बीज क्रांति – पारंपरिक बीजों की जगह उच्च उपज देने वाले संकर बीजों का प्रयोग।
- हरित क्रांति तकनीक – HYV बीज, रासायनिक उर्वरक और सिंचाई के गहन प्रयोग।
- यंत्रीकरण – ट्रैक्टर, थ्रेशर, हार्वेस्टर, पंपसेट आदि का तेजी से प्रयोग।
- सिंचाई का आधुनिकीकरण – ट्यूबवेल, स्प्रींकलर और ड्रिप सिंचाई का उपयोग।
- कृषि विपणन – कोल्ड स्टोरेज, मंडी और सड़क-संपर्क में सुधार।

Buxar District location and Administrative Divisions

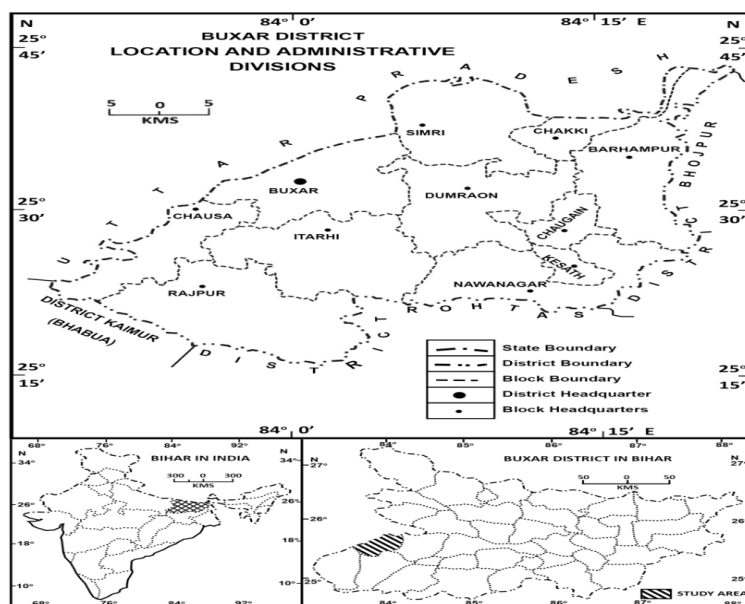


Fig. - 2.1

पर्यावरणीय प्रभाव

- भूमि पर दबाव – बार-बार गेहूँ-धान चक्र अपनाने से भूमि की प्राकृतिक उर्वरता कम हो रही है।
- मृदा प्रदूषण – रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अति प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित।

जल संसाधन पर असर –

- भूजल स्तर में गिरावट।
- गंगा नदी और तालाबों में कीटनाशकों के अवशेष से जल प्रदूषण।
- जैव विविधता का ह्रास – नकदी फसलों और उच्च उत्पादकता वाली फसलों के पक्ष में परंपरागत मोटे अनाज (ज्वार, बाजरा) की खेती घट रही है।
- जलवायु पर प्रभाव – डीजल पंप और मशीनों से कार्बन उत्सर्जन बढ़ रहा है, जिससे क्षेत्रीय स्तर पर जलवायु असंतुलन की स्थिति।

आर्थिक प्रभाव

- उत्पादन वृद्धि – तकनीकी परिवर्तन के कारण धान और गेहूँ की पैदावार प्रति हेक्टेयर कई गुना बढ़ी।
- किसानों की आय में वृद्धि – नकदी फसलों (गन्ना, सब्जियाँ) और बाजारोन्मुखी कृषि से आर्थिक सुधार।

रोजगार संरचना में बदलाव –

- मजदूरी पर निर्भरता कम।
- कृषि मजदूरों का पलायन बढ़ा।
- ग्रामीण युवाओं में कृषि उद्यमिता की प्रवृत्ति बढ़ी।
- ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार – पक्के मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन सुविधाओं में सकारात्मक परिवर्तन।
- कृषि आधारित उद्योगों का विकास – गन्ना मिल, आटा चक्की, धान मिल आदि से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति।

कृषि पद्धति में परिवर्तन एवं पर्यावरण पर प्रभाव

जिस प्रकार से हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि हो रही है, ठीक उसी प्रकार हमारे अध्ययन प्रदेश बक्सर भी अछूता नहीं है। जनसंख्या की अतिशय वृद्धि के फलस्वरूप खाद्यान्न की भी समस्या उत्पन्न होने लगी, जिसके कारण अधिक अन्न उत्पादन हेतु नये-नये किस्मों के बीज, रासायनिक खाद, अधिक उर्वर बीज, सिंचाई हेतु अधिक भू-जल का उपयोग होने लगा, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे पर्यावरण पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के कारण पर्यावरण प्रदूषण तथा पारिस्थितिकी की असंतुलन की समस्या अधिक उत्पन्न होने लगी है। पर्यावरण प्रदूषण तथा पारिस्थितिकी की समस्या उत्पन्न होने का मूल कारण है कि कृषि एक मौलिक परम्परा रही है, जिसके अन्तर्गत कृषक अपने खेत के जैविक एवं अजैविक घटकों पर्यावरण में संतुलन रखते हुए कृषि कार्य करता है। खेत स्वयं में एक पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र हैं तथा खेत में पौधों, जीवाणु, कवक, जीव-जन्तु यथा केचुआ आदि जैव कारक हैं एवं खनिज लवण, खाद प्राकृतिक एवं कृत्रिम तथा अन्य रसायन अजैविक परस्पर प्रतिक्रिया करते हैं एवं जब इसकी मात्रा अधिक हो जाती है, तो कृषि भूमि प्रदूषित होने लगती है। इसलिए यही मूल कारण रहा है कि वर्तमान समय में कृषि में नये-नये तकनीक का प्रयोग से इसमें और भी अधिक हो गई है, जिसके फलस्वरूप पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

कृषि परम्परागत यंत्रों के बदले मशीनरी का प्रयोग

पूर्व में कृषि परम्परागत यंत्रों से किये जाने पर समय तो अधिक लगता था, लेकिन किसी भी प्रकार का पर्यावरणीय या पारिस्थितिकी समस्या उत्पन्न नहीं होती थी, परन्तु जब अधिक उत्पादन हेतु कृषि कार्य में नये-नये मशीनरी का उपयोग किया जाने लगा, जिसके परिणाम स्वरूप पशुपालन का स्वरूप बदल गया। परम्परागत खादों का प्रयोग कम होने लगा अर्थात् स्थायी उर्वरा में कमी होने लगी तथा जैविक घटकों का तीव्र गति से विनाश होने लगा तथा खेत के जैविक घटक असंतुलित होकर उत्पादकता को घटा दिया।

रासायनिक खादों का अन्धाधुन्ध प्रयोग

रासायनिक खादों का अधिक प्रयोग किये जाने के कारण फलस्वरूप उपज में अत्यधिक वृद्धि तो हुई परन्तु कृषि भूमि पर विपरीत दूरगामी प्रभाव पड़ा। रासायनिक खादों का अत्यधिक प्रभाव से भूमि की उर्वरता शक्ति आगे चलकर कम होन लगा तथा कृषि भूमि में फास्फोरस की उपलब्धता, नाइट्रोजन की मात्रा, पोटाशियम की मात्रा की प्रतिशत में कमी आई। वर्ष 1980—81 में दशक में 55 लाख टन नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा नाइट्रोजन का उपयोग किया गया जिसके फलस्वरूप 13 करोड़ टन अन्न का उत्पादन किया गया, जिसके फलस्वरूप 13 करोड़ टन अन्न का उत्पादन किया गया, जिससे मिट्टी से 1 करोड़ 80 लाख टन पोषक तत्व निचोड़ ली गयी और लगभग 50 लाख टन पोषक तत्व ही सेंटीय पदार्थ द्वारा भूमि को वापस मिल पाया अर्थात् रासायनिक खाद के रूप में 55 लाख टन ही भूमि में पहुँच सका तथा 75 लाख पोषक तत्वों का पहुँचना शेष रह गया, जिसके फलस्वरूप दशक में 75 लाख टन पोषक तत्व मिट्टी से समाप्त होते जा रहे हैं जिसके कारण उपजाऊ भूमि धीरे-धीरे बंजर भूमि के रूप में बदलती जा रही है।

कीटनाशकों दवाओं का अधिक प्रभाव

कीटनाशकों दवाओं का अत्यधिक उपयोग करने से खरपतवार एवं कीटों का नाश होकर कृषि उपज में वृद्धि तो हुई है, परन्तु दूसरी तरफ भयंकर परिणाम भी परिलक्षित हो रहा है। खरपतवार एवं कीट एक जैविक घटक है, जो अन्य जैविक घटक फसल एवं अजैविक घटक खनिज लवण खाद के साथ क्रियाएँ एवं उपयोग कर उपज को हानि पहुँचाता है। खेत का अजैविक घटक असंतुलित हो जाने के कारण मानव के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। एफ.ए.ओ. के आकलन के अनुसार, कीटाणु नाशकों के फैले जहर से विश्व स्तर पर 10,000 लोगों की मृत्यु हो रही है। कृषि भूमि से ये रसायन इतनी अधिक मात्रा प्रवेश कर गयी है, जिसके फलस्वरूप भूमि का मूल स्वरूप बदल गया है।

सिंचाई का अधिक प्रयोग

कृषि में सिंचाई का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ गया है जिसके कारण बड़े-बड़े नहरें, बांधों एवं जलाशयों का निर्माण करने पर जोर दिया गया, जिसके फलस्वरूप कृषि उपज में वृद्धि तो हुई परन्तु नहरें एवं जलाशयों के किनारे जल जमाव हो जाने के कारण कई तरह की बीमारियाँ होने लगी एवं निकटवर्ती क्षेत्रों का भूमिगत जल स्तर भी ऊपर आता जा रहा है। जलाशयों एवं नहरों के निर्माण के कारण लोगों को विस्थापित होना पड़ रहा है, जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी में भी वृद्धि हो रही है, तथा सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र ही अव्यवस्थित होता जा रहा है।

गहन कृषि

जहाँ एक तरफ कई तरह की फसलें उगाई जा रही हैं वही दूसरी तरफ भूमि में एन.पी. के सहित मैग्नीशियम, कैल्शियम, लोहा, जिंक, तांबा, सल्फर, बोरॉन आदि पोषक तत्वों की कमी होती जा रही है। देश में लगभग 47 प्रतिशत जिंक में, 11 प्रतिशत लोहे की कमी तथा

5 प्रतिशत मैग्निशियम की कमी भूमि में होती जा रही है। अतः इस प्रकार से कृषि में उन्नत बीज का प्रयोग, रासायनिक खाद का प्रयोग, कीटनाशकों का प्रयोग, उर्वरकों का प्रयोग, सिंचाई एवं मशीनीकरण के उपयोग के कारण पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है, जो विचारणीय है।

जनसंख्या विशेषताएँ

भौगोलिक अध्ययन में मानव का एक आधारभूत स्थान है तथा किसी भी प्रदेश का एक भौगोलिक तत्व के साथ—साथ कारक एवं संसाधन भी है। जिस प्रकार से जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, ठीक उसी प्रकार से उतनी ही अधिक अनाजों की आवश्यकता बढ़ जाती है, जिसके लिए कृषि में नये—नये तकनीकों का प्रयोग कर अधिक उपज बढ़ाने पर ध्यान दिया जा रहा है। लेकिन आज उपज में वृद्धि तो हुई परन्तु पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है, इसलिए अध्ययन क्षेत्रों की जनसंख्या की अध्ययन करना अति आवश्यक हो जाता है। यह इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में कृषि को और विकसित करना होगा और साथ पर्यावरण को भी सुरक्षा करनी होगी। आज हमारे सामने पर्यावरण में परिवर्तन का प्रभाव एक बहुत बड़ी चुनौती है। पर्यावरण की कई समस्याएँ जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण हानिकारक कचरा और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण के कारण खेती पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण की समस्या की परिस्थिति 1947 से 1995 तक बहुत ही खराब थी। 1995 से 2010 के बीच विश्व बैंक के विशेषज्ञों के अध्ययन के अनुसार अपने पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने में भारत दुनिया में सबसे तेजी से प्रगति कर रहा है, इसके बावजूद भारत विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के स्तर तक आने में तथा इसी तरह के पर्यावरण की गुणवत्ता पहुँचने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करना है। पर्यावरण की समस्या विशेष रूप से बीमारी, स्वास्थ्य के मुद्दे और लंबे समय तक आजीविका पर प्रभाव का प्रमुख कारण है। देश में बढ़ती जनसंख्या को खाद्य आपूर्ति के लिए औसतन जितनी अनाज की आवश्यकता है। उसे पूरा करने के लिए भारतीय खाद्य निगम चिन्तित है। खाद्य आपूर्ति हेतु सरकार द्वारा आयात एवं निर्यात दोनों पर आश्रित होना पड़ता है। क्योंकि यह एक ऐसा चक्र है जो बिना आर्थिक—व्यवस्था के चल नहीं सकती। इस लिए सरकारी विनियम पद्धति द्वारा कृषि विकास कार्यक्रम द्वारा इसे संचालित करती हैं। जैसा कि हम जानते हैं भारत कृषि प्रधान देश है। हमारी 95 फिसडी आय का श्रोत कृषि पर निर्भर है। भारत में मुख्य अनाज के रूप में गेहूँ, मक्का, ज्वार के अतिरिक्त धान और अन्य खरिफ फसल और रवि फसल की पैदावार कि जाती है। किन्तु विगत कुछ वर्षों में पर्यावरणीय बदलाव के कारण इस फसलों के पैदावार में कमी आयी है। जिसका परिणाम यह हुआ कि हमें कभी—कभी दूसरे देशों से आयात करना पड़ता है। पर्यावरण में आये बदलाव में जल स्तर का गिरना मुख्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण में अप्रयास वर्षा, बाढ़, सुखाड़ आदि समस्या भी इसका एक मुख्य कारण है। वातावरण में आए मुख्य बदलाव कृषि को बाधित करती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक प्रक्रिया को अपनाया जाए ताकि खाद्य आपूर्ति प्रयास हो सके। जहाँ तक मेरा मानना है कि कृषि में आधुनिक का होना क्या सदी है? इस विश्व भर में ही नहीं बल्कि पूरा विश्व चिन्तित है। क्योंकि आधुनिकीकरण से तो कृषि में उपज की वृद्धि देख सकते हैं किन्तु इसका दुष्परिणाम जो हमारे पर्यावरण पड़ रहा है एक चिन्तनीय विषय है।

आज जिस तकनीकी के माध्यम से जो कृषि कि जा रही है उसका व्यापक असर हमारे पर्यावरण पर भी पड़ रहा है। आज जो फसल हम उपयोग में ला रहे हैं वे फसल मुख्य रूप से जैविक फसल का एक रूप है। जैविक फसल हम उस फसल को कहते हैं जो फसलों में किटनासक, उर्वरक के अतिरिक्त अन्य हानिकारक केमिकल द्वारा तैयार कि जाती है। इसका असर तो हमारे शारीरिक पर पड़ता ही है। उससे भी अधिक पर्यावरण पर पड़ता है। किन्तु मांग आपूर्ति एवं पर्याप्त साधन के कारण पुरा विश्व इस तकनीक के आगे नत—मस्तक है। जहाँ पर पारम्परिक कृषि कुछ क्षेत्रों में तो किया जा सकता है किन्तु मृदा कि गुणवत्ता घटने के कारण आज इसकी आधुनिक कृषि आवश्यकता जरूरी हो गई है। प्रायः देखा जाता है कि कृषि में आधी अधुनिकीकरण ने एक क्रांति का रूप ले लिया है। आज सिंचाई से लेकर फसल कटाई तक सभी मशीनिकरण हो गए हैं। फसलों में विभिन्न प्रकार की गुणवत्ता विकसित करने के लिए पुरे बाजार इस ओर आकृषित हो रहा है। आज बड़े—बड़े मशीने खेती के काम में लाए जा रहे हैं। कृषि अब न केवल एक खाद्य आपूर्ति रह गया है, बल्कि पुरे आर्थिक व्यवस्था को चला रहा है।

सामाजिक प्रभाव

- सामाजिक असमानता – बड़े किसानों को तकनीकी साधनों का अधिक लाभ मिला, जबकि छोटे और सीमांत किसान कर्ज के बोझ से दबे।
- कृषि पलायन – मजदूर वर्ग का एक बड़ा हिस्सा पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की ओर पलायन करने लगा।
- महिला श्रमिकों पर असर – मशीनों के प्रयोग से महिला श्रमिकों का रोजगार घटा।
- ग्रामीण समाज का आधुनिकीकरण – शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवनशैली में बदलाव।

समस्याएँ और चुनौतियाँ

- छोटे किसानों के पास पर्याप्त पूंजी और तकनीक की कमी।
- भूजल दोहन और जल संकट।
- रासायनिक खेती से स्वास्थ्य संबंधी खतरे।
- जलवायु परिवर्तन और अनियमित वर्षा का प्रभाव।
- बाजार और मूल्य निर्धारण की समस्या।

सतत कृषि की आवश्यकता

- जैविक खेती को बढ़ावा।
- फसल चक्र और मिश्रित खेती अपनाना।
- सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग।
- किसानों के प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम।
- सरकारी सहयोग व उचित मूल्य समर्थन।

निष्कर्ष

बक्सर जिले में कृषि तकनीकी परिवर्तन ने कृषि उत्पादन और आर्थिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। लेकिन, इसके साथ-साथ पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याएँ भी बढ़ी हैं। इसीलिए आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति और पर्यावरणीय संतुलन के बीच संतुलन बनाया जाए। सतत और पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियाँ अपनाकर ही बक्सर की कृषि को भविष्य में टिकाऊ और समृद्ध बनाया जा सकता है।

संदर्भ (References)

1. सिंह, सविन्द्र (2009). भारतीय कृषि का भूगोल. प्रयाग पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
2. कुरैशी, एस. ए. (2015). भारतीय कृषि का आर्थिक भूगोल. राजतिलक पब्लिकेशन, पटना।
3. कृषि विभाग, बिहार सरकार (2022). बिहार कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट. पटना।
4. धिल्लों, एच. एस. (2002). Agricultural Geography. Tata McGraw Hill, New Delhi.
5. Government of Bihar (2023). Bihar Economic Survey 2022-23. Finance Department, Govt. of Bihar.
6. Directorate of Economics and Statistics (2022). Agricultural Statistics at a Glance. Ministry of Agriculture, Govt. of India.
7. FAO (2021). The State of Food and Agriculture. Food and Agriculture Organization of the United Nations, Rome.
8. IPCC (2022). Climate Change 2022: Impacts, Adaptation and Vulnerability. Intergovernmental Panel on Climate Change, Geneva.
9. Mehta, Sunil Kumar & Chakravarty, Dr. Moyna (2021). Anemia in Pregnant Women: Causes and Remedies. Scholars Press.
10. District Census Handbook, Buxar (2011). Census of India 2011. Government of India, New Delhi.